ब्रह्मचारी लामचीदास जी : एक महान व्यक्तित्व

इतिहास और पुराण ग्रंथ इस बात का जीवंत साक्ष्य है कि महानतम व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति अपने जीवन का अमूल्य समय अपने जीवन परिचय को लिखन–लिखवाने में नहीं गवाते हैं। जिज्ञासुजन उनके कार्यों से उनका जीवन परिचय खोज निकालते है।

भगवान महावीर के शासन काल में ब्रह्मचारी लामचीदास ऐसे एक मात्र ज्ञात श्रावक है जिन्होंने कैलाश पर्वत के जिनालयों के साक्षात दर्शन किए है।

ब्रह्मचारी लामचीदास जी ने अपनी कुल परम्परा को गौरान्वित करते हुए महानतम दुर्लभ कार्य करते हुए अपनी दुर्लभ मनुष्य पर्याय को धन्य किया । ब्रह्मचारी जी के जीवन परिचय के बारे में कुछ विशेष उल्लेख (लिखित अथवा मौखिक) नहीं मिलता। 104 पृष्ठ के यात्रावृतान्त पत्र में से उपलब्ध कुछ पृष्ठ गोलालारीय दि. जैन समाज ललितपुर ने 'श्री कैलाश यात्रा' के नाम से एक 16 पृष्ठ की पुस्तक में प्रकाशित किए थे। पुस्तक के तीसरे संस्करण के आधार पर उनके परिचय को सहेजने का एक प्रयास किया गया है।

ब्रह्मचारी अदम्य साहसी, निडर, अद्भुत क्षमता वाले, जिनेन्द्र देव और जिनवाणी पर अकाट्य श्रद्धान रखने वाले, अपनी महान संकल्प शक्ति से देवों को भी अपने पक्ष में करने वाले महान पुरुष थे। इनका जन्म भूटान देश के गिरिमध्यनगर (गिरिजम नगर) में सूर्यवंशी गोलालारे जैन परिवार में हुआ था। वे भरे पूरे कुटुम्ब परिवार, इष्ट, मित्रों को छोड़कर कैलाश के दर्शनों की अभिलाषा से सं. 1806 (सन्1774) में अपना गृह नगर त्याग कर भारत, ब्रह्मा, चीन, तिब्बत की यात्रा करते हुए मानसरोवर झील के रास्ते से होते हुए कैलाश पर्वत पहुँचे।

उन्होंने 240 वर्ष पूर्व अपने गृहनगर गिरिमध्यनगर भूटान देश से 150 कोस चलकर कामरुपनगर (असम, भारत) पहुंचे, वहां से 400 कोस पूर्व में चलकर ब्रह्मा देश (म्यांमार) के किरीटम देश के कोशीनगर पहुंचे, कोशीनगर से 200 कोस पूर्व में चलकर म्यांमार के आवा नगर पहुंचे, आवा से 350 कोस पूर्व में चलकर केशव नगर कपूरी देश (म्यांमार) पहुंचे केशवनगर से चलकर कोचीन (चीन) देश के हेवानगर पहुंचे वहां से 600 कोस चलकर होवोनगर (चीन में) पहुंचे। यह दोनों नगर आज भी इसी नाम से जाने जाते है। वहां से 1300 कोस उत्तर में चलकर चीन के देश के ही ठाकुल नगर पहुंचे। ठाकुल नगर से पश्चिम की ओर 900 कोस चलकर पेकिंग शहर (बीजिंग) पहुंचे। यहां पर रहकर उन्होंने चीन के राज वैभव को विस्तार से वर्णन किया। पेकिंग (बीजिंग) से 1500 कोस पश्चिम में चलकर तातार देश (चीन) के सागर नगर पहुंचे वहां से 1100 को पश्चिम में चलकर मुंगार देश (तिब्बत) के बरजंगम नगर पहुंचे। बरजंगम से दक्षिण की ओर 400 कोस चलकर छोटी तिब्बत के एरूल शहर पहुंचे।

विपरीत परिस्थितियों में एरुल शहर से 80 कोस दक्षिण की ओर चलकर मानसरोवर झील के पास सिलवन नगर (छोटी तिब्बत) पहुंचे, वहां से 60 कोस उत्तर की ओर हनुवर देश (तिब्बत) के एक धर्मांव नगर पहुंचे। आज यह नगर तीर्थ पुरी के नाम से प्रसिद्ध है। यहां से कैलाश पर्वत के दर्शन हमेशा होते रहते है। ग्रीष्म ऋतु में कभी–कभी तो यहां से मंदिरों के चिन्ह दिखाई देते है। ऐसा ब्रह्मचारी लामची दासजी ने यात्रा वृतान्त में उल्लेख किया है। यहां से 40 कोस के विशाल जंगल का पारकर सगरगंग नाले (नदी) पर पहुंचे।

सगरगंग नाले से 32 कोस ओर चल पाने पर ही कैलाश पर्वत के शिखर तक पहुंचा जा सकता था लेकिन विशाल सगरगंग नाला आ जाने के कारण कैलाश पर्वत पहुंचना मुश्किल था। अत: ब्रह्मचारी लामचीदास जी ने वीतराग भाव धारण कर खड़े योग से ध्यान कर यह नियम (आखणी) लिया 'जब तक कैलाश के दर्शन (कैलाश पर स्थित जिनालयों एवं जिनबिम्बों के दर्शन) नहीं होंगे तब तक अन्न जल का त्याग करता हूँ और संन्यास मरण यहां ही करुंगा ओर कदाचित दर्शन हो भी जाएं तो 23 तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि के दर्शन कर वस्त्र दूर करुंगा। मुनिव्रत धरुंगा। परिषह सहूंगा''।

भगवान आदिनाथ के निर्वाण के पश्चात भरत चक्रवर्ती द्वारा निर्मित 72 जिनालयों में विराजित जिनबिम्बों के दर्शन की उत्कट अभिलाषा एवं महान संकल्पशक्ति के साथ ब्रह्मचारी लामचीदास जी चार दिन तक निराहार रहकर पंच परमेष्ठी का ध्यान करते रहे। चार दिन बाद एक व्यतर देव मनुष्य का रुप धारण कर प्रकट हुआ उस व्यंतर ने ब्रह्मचारी लामची दासजी को बहुत समझाया, डराया, धमकाया। यहां तक कि वह इनको धक्का भी देता रहा और बार–बार यह कहता रहा कि ''तुम मूर्ख हो ! पागल हो ! कैलाश के दर्शन कैसे करोगे? जाओ–यहां से कैलाश के दर्शन नहीं होंगे यह सगर गंग नाला चार कोस गहरा और चौड़ा है। आगे 32 कोस ऊंचा पर्वत है जाओ तुमको दर्शन कैसे होंगे?'' व्यंतर देव ने ब्रह्मचारी लामची दासजी को वापिस भेजने का बहुत प्रयास किया लेकिन ब्रह्मचारीजी की संकल्पशक्ति के आगे व्यंतर देव की एक न चली सकी। अंत में व्यंतर देव ने हार मानकर उनको सशर्त कैलाश पर्वत के जिनालयों में विराजित जिन प्रतिमाओं के दर्शन करवाए तथा उसी व्यंतर देव ने ब्रह्मचारी के लिये कैलाश पर्वत पर गाइड का भी कार्य किया। वह विस्तार से सब समझाता भी रहा। इसका उल्लेख ब्रह्मचारी लामचीदासजी ने अपने यात्रावृतान्त में किया है।

ब्रह्मचारी लामचीदासजी ने 7330 कोस चलकर गिरिराज के अष्टापद कैलाश के दर्शन किये। अष्टापद कैलाश के जिनालयों की वंदना के पश्चात 2564 कोस चलकर उन्होंने अपने जन्मस्थान भूटान देश के गिरिमध्यनगर में 18 वर्ष पश्चात प्रवेश किया। इस प्रकार कुल 9894 कोस की यात्रा का उल्लेख है। इस संपूर्ण यात्रा वृतान्त के उल्लेख में लामचीदास जी ने मार्ग में अनेक जैन धर्मावलम्बियों के जिनालयों का वर्णन एवं जैन जातियों का भी वर्णन किया। भूटान से भारत, म्यांमार, चीन, तिब्बत में लाखो जिनालय एवं अनेक प्रकार के जिन पूजक गृहस्थों की मान्यता वाली मूर्तियों के दर्शन उन्होने किये। विशाल जिनालय विशाल प्रतिमाएं हजारो छोटे–छोटे जिनालयों के भी उन्होंने दर्शन किये। गिरिमध्यनगर की विभिन्न धर्मशालाओं में एक वर्ष तक रहने के पश्चात उन्होंने सगरगंग नाले पर लिये गए संकल्प को पूर्ण करने के लिए मानव से महामानव बनने के लिये अपनी यात्रा प्रारंभ की। इस प्रकार उन्होंने अपने जन्मस्थान को हमेशा के लिए त्याग दिया। सर्वप्रथम उन्होंने 20 तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि अनादि निधन गिरिराज परम पवित्रधाम सम्मेद शिखरजी के दर्शन किए पश्चात चम्पापुर, पावापुर, राजगृही कलजीवन, सोनागिरीजी, रेवातट, मक्सी, पार्श्वनाथ, विंध्याचल बड़वानीजी, सतपुरीगिरी, मांगीतुंगीजी, सांद्रिगिरी, गजपंथाजी, गिरनारजी, भावनगर, गोम्मटस्वामी, तिलंगदेश, द्राविण देश कर्नाटक देश के जिन मंदिरों की वंदना करते हुए जैन बद्री मूड बद्री आ गए।

इस प्रकार वे कुल 22 वर्षों तक सभी निर्वाण भूमि अतिशय क्षेत्र, सिद्धक्षेत्र और देश विदेश के अनेक जिनालयों की वंदना करते रहे।

महाव्रतों को अड़्गीकार करने के पूर्व ब्रह्मचारी लामचीदासजी ने अपने यात्रा वृतान्त को 104 पृष्ठों में लिपिबद्ध (हिन्दी में) करवाकर कौशल, कुरूजांगल जैसे अनेक देशों के लिये प्रेषित करवाया।

उन्होंने अपने पत्र के अंत में एक नोट लिखा – 'श्रावक सर्वजनों संशय न करनी श्रावक जो जाय सो अपनी सम्पक्त्व से दर्शन करों जाने में भ्रम न करना जरूर दर्शन होयगे। जिन धर्म दोय प्रकार है निश्चय और व्यवहार। सोनिग्रंथन (मुनिराज) निश्चय है और व्यवहार ही जानने भगवान की वाणी सोई खिरी है सो पत्र गाथा निश्चय सत्य मानों। इनके यात्रा वृतान्त की विशेषता यह है कि इनके यात्रा स्थानों में जो भी, जैसा भी स्थान आया उसका उल्लेख अवश्य किया; चाहे वह जैन मंदिरों का उल्लेख हो। चाहे होवा नगर की बाहुबली भगवान की बौद्धमतावलम्बियों द्वारा पूजे जाने का उल्लेख है। चाहे गौतम बुद्ध के नाम से प्रचलित गौतम सन् का उल्लेख हो, चाहे तिब्बत में पाए जाने वाले हजारों लाखों जैन मंदिरों का वर्णन हो, चाहे कैलाश पर्वत पर भरत द्वारा बनवाए गये 72 जिनालयों, जिनबिम्ब का उल्लेख हो, चाहे कैलाश पर्वत एक हजार धनुष ऊंचे रुद्रमहल के ध्वशावशेषका उल्लेख हो, चाहे चीन के वैभव का उल्लेख। सब का बहुत सहजता से उल्लेख किया है। संपूर्ण यात्रा वृतान्त आग्रह रहित है।

ब्रह्मचारी लामचीदासजी का यात्रा वृतान्त सहज ही विश्वास करने योग्य नहीं है। इसलिए एक सज्जन ने तो यह कह दिया कि हम इसे सत्य क्यों माने? इस प्रश्न ने मेरे मन मस्तिष्क को झकझोर दिया और फिर मैने सत्यता जानने के लिए उनके यात्रा वृतान्त में उल्लेखित नगरों की उनकी दूरी को नक्शे पर उतारा। नगरों के नामों का ऐतिहासिक अध्ययन किया तो यह ज्ञात हुआ कि नगरों की दूरी तो वहीं रहीं लेकिन नगरों के नाम, बसाहट आदि में बहुत अंतर आ गया। इन तीन सौ वर्षों में संसार में अनेक भौतिक, अभौतिक, राजनैतिक परिवर्तन हुये तिब्बत के घने जंगल मैदान में बदल गये। एशिया, यूरोप में अनेक क्रांतियां हुई बहुत सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक उलट पलट हुई। ऐसा चीन, तिब्बत और म्यांमार में भी हुआ। फलस्वरुप नगरों के नाम, स्थान, नदी आदि के नाम परिवर्तित हो गये। चीन में तो राजतंत्र से साम्यवाद आ गया। उसने चीन की संपूर्ण प्राचीन सभ्यता, संस्कृति, रीति–रिवाज में आमूल–चूल परिवर्तन कर दिया। नगर, स्थान, नदी, पर्वत, मंदिर आदि के नाम बदल गए। चीन में पल्लवित पुष्पित जैन संस्कृति का लोप हो गया। ब्रह्मचारी लामची दासजी के यात्रा वृतान्त में कहीं भी शंका की आशंका प्रतीत नहीं होती। अति अल्पसमय में दिगम्बर मुद्राधारण कर महाव्रती बनने वाला महान आत्मा झूठ को उल्लेखित क्यों करेगी। ऐसा कभी हो ही नहीं सकता।

आलेख – निर्मलकुमार जैन, विदिशा (म.प्र.)

पाठको की कलम से ..

गोलालारीय दर्शन के माह मार्च 2013 में प्रकाशित 'होम्योपैथिक से आसान इलाज (माइग्रेन) एवं योग' लेख पढ़कर अत्यंत खुशी महसूस हुई । इस लेख से समाज के कई लोगों को जानकारी एवं लाभ मिलेगा। धर्म प्रभावना के साथ साथ यह एक अच्छा प्रयास है। आप सब बधाई के पात्र है। – **एस.सी. जैन,** एसबीआई, स्कीम नं.54, इन्दौर

महिला मंडल की विशेष सभा संपन्न

इन्दौर, अनुपमा जैन। गोलालारीय महिला मंडल की अप्रैल माह की मासिक सभा का आयोजन रेशु जैन एवं श्रीमती अनु जैन के आतिथ्य में मेघदूत उपवन में किया गया। सभा में मंगलाचरण पश्चात नियमित गेम्स, तंबोला आदि खिलाये गये। महावीर जयंती के अवसर पर पालना गीत गाये गये। महिला मंडल की सचिव श्रीमती भारती जैन द्वारा सामाजिक हित संवर्द्धन हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत किये गये। जिसे सभी ने ध्वनिमत से सहमति प्रदान की। * महिला मंडल की महिलाओं को धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में सक्रियता से आगे आना चाहिए। * समाज उपयोगी गतिविधियों के संचालन हेतु क्षेत्र अनुसार 15 से 18 महिलाओं के चार समूह का गठन किया गया। जो वर्ष में एक बार समाज उपयोगी कार्यों का संचालन करेंगे। निर्धन एवं जरुरतमंद परिवारों के लिए आर्थिक सहायता हेतु प्रयास करेंगे। समाज की शीघ्र प्रकाशित होने वाली 'प्रयास' पुस्तिका के जनगणना फार्मों को अपने क्षेत्रों में एकत्रित करने का प्रयास महिला मंडल की सदस्या करेंगी।